

Title of Mss. Purnush Garam
No. of Folios : 7 VIDHI
Materials : PP L
Conservation : Preventive/Curative
Performed by KKHL, MCC : GU
National Mission for manuscripts,
New Delhi,
Date: 29.10.06 (37)

पुस्तक गठन विधि / काव्य /
१-१ भाग / असह्य / अक्षर /
२०x२० CM / ठेक लिखत नाही

Chidananda Goswami
KKHL MRC Catalogue

काव्य विधि प्रकाश

पूकष मखन तिठि ॥

शनि | दोष गोविदाय नमः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ नवा कृष्ण ज्ञानाथ दुःखिनाथ दुःख नाशकः |
 मखने नद्विती त्रुणं अत्रुणं कृतं मया ॥ ॥ अत्रुणित्वां दुःखिनाथे पित्रुणं शान्तिं द्विजे
 कृते | आष शुद्ध त्रुणाणां यथावश्यकं नित्रुणं ॥ ॥ ॥ एतादौ शुक्ल दिने बालक वत् कुर्यात्,
 पशु दिने अमादि अमाप्युत्तरे यथाशक्ति विद्वि भोज्य नाना द्रव्य व्रथादि अत्रुणं शुक्ल गृहे
 अमागतं शुक्लांग्रे हस्तवत् कुर्यात् ॥ ॥ ॥ ॥ अत्रुणं वाषं उवाषं शुक्लांग्रे बालक उवाषांगो
 त्रुणे नममाने हस्तवत् कुर्यात् उवाषं अत्रुणं ॥ ॥ ॥ शुक्ल वृते यथा ॥ शुभं शोभः यमः काल
 महाप्रतापि पशुवरे | एते शुभाशुभ अत्रुणं कर्मणो नव आशुनिः ॥ शुभं, चन्द्र, यम,

१४॥ श्रानादिकुर्व्यानित्रुं गुरुदुर्घेचलामना । नव्यद्रव्यानि अहलके दीयते गुरुआनिवौ ॥ १४ ॥
 एकआदि उवेयेषां अदाशुभेहवयमला । एकाश्रेस्त्रियते तेन अन्यथापातक उवेय ॥
 १५॥ शुक्लाच अत्यमानियां अधिकश्याविकेदाने । बह्वंशनेच तपुले यानिआनिच शुभ्रशे ॥
 १६॥ शुक्लाथे चित्तयेकय्यं अदाशुभेहीतजवया । शुक्लाग्याथ कृते निश्चिद्विदीपाशुमेवच ॥
 १७॥ गुरुकश्चे अदावायजा यथासूहेच । शुभ्रशनेच नियातं पापाकिन्निनाशनं ॥ १७ ॥
 १८॥ शुभ्रकशां अं तथा अंशं शुक्लापाशोच बह्वंशये । शापानिदि कुरुतेच वकाह उककेवगते ॥ १८ ॥

(अहंशुभं वापकं शापुं कृत्वा नैन नव्यनामाभिहितं कृत्वा आनेषां विअउये ॥
 १४० शुभ्रिजाते जाते दि ४६ शुभ्रिजा दि ४० न शुभ्रिजाते जाते ॥
 सा ४६ (जाते-४०)

উক্ত শ্রুতিতে যানাদি পাদকোচ কথ্যেন | শ্রবণে সর্ব মাষকু কোবিদ্যক্রম নিশ্চয়ো ॥১১

শ্রবণে সর্ব মাষকু কোবিদ্যক্রম নিশ্চয়ো ॥১১
শ্রবণে সর্ব মাষকু কোবিদ্যক্রম নিশ্চয়ো ॥১১
শ্রবণে সর্ব মাষকু কোবিদ্যক্রম নিশ্চয়ো ॥১১

১০ ॥১১ শ্রবণে সর্ব মাষকু কোবিদ্যক্রম নিশ্চয়ো ॥১১
শ্রবণে সর্ব মাষকু কোবিদ্যক্রম নিশ্চয়ো ॥১১
শ্রবণে সর্ব মাষকু কোবিদ্যক্রম নিশ্চয়ো ॥১১

শ্রবণে সর্ব মাষকু কোবিদ্যক্রম নিশ্চয়ো ॥১১

(ইতি শ্রুতিতে সর্ব মাষকু কোবিদ্যক্রম নিশ্চয়ো ॥১১)

॥ (नाथूर, कदावि, मिकव, रेखादि आधुवि लोकक उदय रोगा निरुमे शक्ति उदय दि,
पर्वे, गोम-पटात, दुर्वा यून तिमि छाईम उमामि जल दि शतरे पोयारे निरु सतिमित अहकणे
कवारे, गोमुख गोवर अण धुधव, शांति कविव, पर्वे शश्यास गोव, आठ अठणेच्छ, रिच्छ
बुद्धि बुद्धाई दिव ॥१॥) अहकल्प शक्ति

नमो अद्य श्री गुरु उगे आ अमुक धामे अमुक वासा द्विते अहकवे अमुक नामे अमुक
श्यांति ये वेतामिन विनिष्ठ पुण्ये आरताये उदय देने आरतवर्षे मिम श्री विष्णु श्रुति
कामनाय श्री अमुक दास, मम अमुक जाते जन्माधुवि कुले निर्गता, एतन्तेन कुणा

মম প্রবর্তনাত্ত নিমিত্তক আশ্বিন পাবনি বাসবে বাসনায বা শীতকবে অমায়সিয়া

(প্রহ্মান্তির ভোক্ত্য উৎসর্গ করা অক্ষয় এই কাল)

নমো অমু শীশু উৎসর্গ অমুক মাঙ্গি অমুক পক্ষে অমুক বাসস্থিতে জর্কবে অমুক
তিথো কৈতাম্বন বিমিষ্ট পুণ্যে ভাবতাক্ষে প্রদেনে বাস্যম ধাষি মো অমু শী অমুক
দামস্য শুভ্যং কর্ত্ত্বাঙ্গিঃ পূর্বে উদ্ভূ কক্ষানি অক্ষাদন বসন জনিত যৎ বেত্তন্যদৌধ
মাস্তি ৩৭ পাপা ক্রয় বাসনায শীশুক পুণ্ডি নিমিত্তক অমু দৈচাদায়ন ব্রতমহ
সবিজে ব্রতানন্তে বিনু মুণ্যার্থে অমুক সন্ধকক্ পুত্রাৎ শী উক চবনেদানমহ বাবজ

কোনো নবায় সুকৃত পবন মোমোখাকে বিয়ু বসায় যদি উক্ত কৃমে সাক্ষ্য রাখি
কিঞ্চিৎ দূর লে স্যান্তি কথিব) ॥